NEERAJ®

जेंडर संवेदीकरण- संस्कृति, समाज और परिवर्तन

(Gender Sensitization : Culture, Society and Change)

B.G.D.G.-172

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Vaishali Gupta

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

जेंडर संवेदीकरण—संस्कृति, समाज और परिवर्तन

(Gender Sensitization: Culture, Society and Change)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1
Question Paper—December-2022 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in July-2022 (Solved) 1-2
Sample Question Paper–1 (Solved) 1
Sample Question Paper–2 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

खंड-1 : जेंडर की अवधारणा का निर्माण (CONCEPTUALIZING GENDER)

1. जेंडर संबंधी संकल्पनाओं को समझना 1
(Understanding Gender Related Concepts)

2. जेंडर और लैंगिकताएं (सेक्सुअलिटी) 14
(Gender and Sexualities)

3. पुरुषत्व 24
(Masculinities)

4. दैनिक जीवन में जेंडर 35
(Gender in Everyday Life)

खंड-2 : जेंडर और परिवार (GENDER AND FAMILY)

5. परिवार और विवाह 47
(Family and Marriage)

6. मातृत्व 59
(Motherhood)

खंड-3 : जेंडर और कार्य (GENDER AND WORK)

7. कार्य को जेंडरीकृत करना (Gendering Work) 70

8. कार्य और श्रम बाजार में जेंडर मुद्दे 81
(Gender Issues in Work and Labour Market)

खंड-4 : स्वास्थ्य एवं जेंडर (HEALTH AND GENDER)

9. प्रजनन स्वास्थ्य एवं अधिकार (Reproductive Health and Rights) 91

10. जेंडर और दिव्यांगता (Gender and Disability) 100

खंड-5 : जेंडर कानून एवं समाज (GENDER, LAW AND SOCIETY)

11. जेंडर आधारित हिंसा (Gendered Based Violence) 108

12. कार्य स्थल पर यौन उत्पीड़न (Sexual Harassment at Workplace) 118

खंड-5 : जेंडर प्रतिनिधित्व एवं मीडिया (GENDER, REPRESENTATION AND MEDIA)

13. जेंडर एवं भाषा 125
(Gender and Language)

14. जेंडर एवं मीडिया कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न 133
(Gender and Media Sexual Harassment at Workplace)

15. जेंडर का पठन एवं परिकल्पना 144
(Reading and Visualizing Gender)

■ ■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

जेंडर संवेदीकरण–संस्कृति, समाज और परिवर्तन

(Gender Sensitization: Culture, Society and Change)

B.G.D.G.-172

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. पुरुषत्व की परिभाषा दीजिए। पुरुषत्व के विविध स्परूपों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-28, प्रश्न-1, पृष्ठ-29, प्रश्न-2

प्रश्न 2. श्रम बल सहभागिता में जेंडर अंतराल की धारणा का मूल्यांकन कीजिए। अपने तर्कों की पुष्टि कोई दो उदाहरण देते हुए कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-72, 'श्रम बल सहभागिता और अर्थव्यवस्था में जेंडर अंतराल'

प्रश्न 3. भाषा के इस्तेमाल में स्त्री/पुरुष होने के फर्क का वर्णन कीजिए। अपने तर्कों की पुष्टि उचित उदाहरण देते हुए कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-125, 'परिचय', पृष्ठ-126, 'भाषा के प्रयोग में पुरुष-स्त्री के बीच अंतर'

प्रश्न 4. यौन उत्पीड़न से क्या अभिप्राय है? इसकी चर्चा, केस अध्ययनों की सहायता से कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-49, 'यौन उत्पीड़न' तथा अध्याय-12, पृष्ठ-119, 'यौन उत्पीड़न की केस स्टडी', पृष्ठ-120, 'कानूनी फैसला'

प्रश्न 5. भारतीय मीडिया में जेंडर की भूमिका की जाँच कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-135, 'मीडिया में महिलाएँ'

प्रश्न 6. संस्कृति एवं समाज के संबंध में जेंडर की रचना का वर्णन, उचित उदाहरण देते हुए कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-43, प्रश्न-8

प्रश्न 7. लिंग एवं जेंडर की श्रेणियों की चर्चा कीजिए। वास्तविक जीवन अनुभवों से दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-16, 'लैंगिक श्रेणीतंत्र'

प्रश्न 8. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) लोक एवं निजी द्विभाजन

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-3, 'सार्वजनिक और निजी विभेद'

(ख) प्रजनन संबंधी अधिकार

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-61, 'प्रजनन और सरोगेसी'

(ग) ग्लास सीलिंग

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-88, प्रश्न-5

(घ) महिलाओं के साथ भेदभाव

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-77, 'लिंग विभेद : सामाजिक लिंग सोच रचना की उपज'

(ङ) गूढ़ पठन

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-145, 'गहन पाठ'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2022

(Solved)

जेंडर संवेदीकरण–संस्कृति, समाज और परिवर्तन

(Gender Sensitization: Culture, Society and Change)

B.G.D.G.-172

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. पुरुषत्व, लैंगिकता एवं हिंसा की अंतःकड़ियों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-24, 'पुरुषत्व (मैस्कुलिनिटी) की चर्चा की क्यों?, पृष्ठ-27, 'पुरुषत्व और महिलाओं के विरुद्ध हिंसा', पृष्ठ-30, प्रश्न 4

प्रश्न 2. परिवार के सिद्धांत पर टिकी नारीवादी समीक्षाओं की चर्चा कीजिए। अपने तर्कों की पुष्टि उचित उदाहरण देते हुए कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-48, 'परिवार का नारीवादी अध्ययन'

प्रश्न 3. प्रजनन स्वास्थ्य के सूचक कौन-से हैं? भारत में प्रजनन स्वास्थ्य संबंधी नीतियों का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-95, प्रश्न 3, पृष्ठ-96, प्रश्न 4

प्रश्न 4. अक्षमता (विकलांगता) क्या है? अक्षमता संबंधी जेंडर मुद्दों का वर्णन, उदाहरण देते हुए कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-103, प्रश्न 1, पृष्ठ-104, प्रश्न 3

प्रश्न 5. जेंडर के परिप्रेक्ष्य में मातृत्व एवं पितृत्व की धारणा का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-59, 'जेंडर भूमिकाएँ : मातृत्व और पितृत्व'

प्रश्न 6. महिलाओं के साथ हिंसा की परिभाषा दीजिए। भारत में इसके विविध स्वरूपों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-112, प्रश्न 3, पृष्ठ-114, प्रश्न 5

प्रश्न 7. क्या आप इस बात से सहमत हैं कि ''साहित्यिक कार्यों में महिलाओं द्वारा प्रयुक्त भाषा, पुरुषों की भाषा से भिन्न होती है''? उदाहरण देते हुए समझाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-126, 'भाषा के प्रयोग में पुरुष-स्त्री के बीच अंतर', पृष्ठ-131, 'अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न'

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) नारीवाद

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-3, 'नारीवाद'

(ख) सशक्तिकरण

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-4, 'सशक्तिकरण'

(ग) जेंडरपरक भूमिकाएं

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'जेंडर भूमिकाएँ'

(घ) नारीत्व

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'स्त्रीत्व'

(ङ) लिंग एवं जेंडर

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'लिंग (सेक्स) और जेंडर'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

जेंडर संवेदीकरण–संस्कृति, समाज और परिवर्तन
(Gender Sensitization : Culture, Society and Change)

खंड–1 : जेंडर की अवधारणा का निर्माण
(Conceptualizing Gender)

जेंडर संबंधी संकल्पनाओं को समझना
(Understanding Gender Related Concepts)

1

परिचय

किसी भी विषय विशेष के विस्तृत अध्ययन के लिए उसकी संकल्पना को समझना अनिवार्य है। इस अध्याय में जेंडर संवेदी करण संस्कृति समाज और परिवर्तन से संबंधित विस्तार से अध्ययन किया गया है। जेंडर हमारे राजनीतिक और सामाजिक भू-दृश्य तथा हमारे व्यक्तिगत पारस्परिक क्रियाकलापों को आकार प्रदान करते हैं। जेंडर समकालीन राजनीतिक सिद्धांत के लिए एक महत्त्वपूर्ण दृष्टिकोण है, जो न केवल मुख्य धाराओं के सिद्धांतों को अपनाने के लिए उनकी सीमाओं और आकांक्षाओं को समझने की शक्ति देता है अपितु नए वाद-विवादों पर भी दृष्टिपात करता है। इस अध्याय में जेंडर की संकल्पनाओं की व्याख्या के अतिरिक्त कुछ अभ्यास कार्य तथा केस स्टडी को भी सम्मिलित किया गया है। इसके अतिरिक्त सेक्स और जेंडर, पुरुषत्व, स्त्रीत्व, जेंडर भूमिका तथा जेंडर आधारित हिंसा और यौन उत्पीड़न के विषय में भी विस्तार से अध्ययन किया गया है।

अध्याय का विहंगावलोकन

उद्देश्य

इस इकाई के माध्यम से विद्यार्थी जेंडर से संबंधित कुछ महत्त्वपूर्ण संकल्पनाओं के विषय में समझने में सक्षम होंगे तथा अपने दैनिक जीवन में जेंडर के निहितार्थों की समझ विकसित कर पाएंगे। इसके अतिरिक्त सत्ताधारी वर्ग में जेंडर के विशेष अधिकारों के विषय में अध्ययन करने में सहायता मिलेगी एवं समाज में हाशिए पर स्थित वर्ग को समझने में भी मदद मिलेगी।

लिंग (सेक्स) और जेंडर

लिंग को महिलाओं एवं पुरुषों के मध्य जीव वैज्ञानिक अंतर के रूप में समझा जा सकता है। मानव का जन्म पुरुष अथवा स्त्री के रूप में होता है। यद्यपि कभी-कभी जन्म के समय मानव शरीर में पुरुष एवं स्त्री की मिश्रित रचना भी पाई जाती हैं। मानव शरीर की रचना में अंतर क्रोमोसोम अर्थात् जननांगों, हार्मोन एवं अन्य शारीरिक संरचना में अंतर के आधार पर समझा जा सकता है। पुरुष क्रोमोसोम XY तथा स्त्री क्रोमोसोम XX होते हैं। विशिष्ट चिकित्सा पद्धति के माध्यम से लिंग परिवर्तन भी संभव है। लिंग परिवर्तन संबंधी घटनाएं प्रकृति की जीव वैज्ञानिक व्यवस्था में बढ़ते असंतुलन को इंगित करती हैं।

लिंग सेक्स की तुलना में जेंडर का प्रारूप सामाजिक होता है। विभिन्न सामाजिक निर्मितियों का निर्धारण जेंडर के आधार पर किया जाता है। इन प्रक्रियाओं में परिवार, समाज एवं अन्य सामाजिक आर्थिक प्रथाओं के आधार पर जेंडर विभेदीकरण किया जाता है। उदाहरण के लिए, वेशभूषा, व्यवहार, सामाजिक भूमिका, स्थिति, पहचान एवं उत्तरदायित्व आदि का निर्धारण जेंडर के आधार पर किया जाता है।

नवजात शिशु के जन्म के समय मनाई जाने वाली खुशियों में अंतर लिंग के आधार पर होता है। जन्म से यह अंतर शिशु को पहने जाने वाले कपड़ों के रंगों, खिलौनों, शिशु के प्रति व्यवहार, संबोधनों आदि के आधार पर किया जाता है। उदाहरण के लिए बालिका को सुंदर नन्हीं परी तथा बालक को मजबूत बहादुर बच्चा कहना, बालिका को गुड़िया तथा बालक को मोटर साइकिल अथवा गेंद जैसे उपहार देना, आदि।

विभिन्न समाजों में जेंडर की निर्मिति अलग-अलग होती है। बालक एवं बालिकाओं पर समाजीकरण की प्रक्रिया के अनुसार भूमिकाएं आरोपित की जाती हैं। यह विभेद उत्पादक और पुनरूत्पादक भूमिकाओं, भुगतान तथा बिना भुगतान वाले कार्य, शक्ति संबंधित तथा राजनीति के आधार पर भी किए जाते हैं। सामाजिक संरचनाओं के अनुसार महिलाओं को निश्चित तरीके से कार्य करने तथा निश्चित भूमिकाएं निर्वहन करने के लिए ही सीमित तथा बाध्य

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

किया जाता है। उदाहरण के लिए प्रजनन, पालन-पोषण और पुनर्जनन संबंधी कार्य। जेंडर संबंधी व्यवहार, भूमिकाओं, पहचान और पेशे से चिपके रहने की यह उम्मीद भी जेंडर के प्रारूपों को रूढ़ बनाना अर्थात स्टीरियो टाइपिंग है।

जेंडर संबंधी कुछ प्रचलित स्टीरियो टाइप का अध्ययन नीचे दी गई सारणी के अनुसार किया जा सकता है–

स्त्री	पुरुष
परतंत्र	स्वतंत्र
कमजोर	शक्तिशाली
अक्षम	सक्षम
कम महत्त्वपूर्ण	अधिक महत्त्वपूर्ण
भावुक	तार्किक
परिपालन करने वाली	निर्णय लेने वाला
घर की देखभाल करने वाली	कमाने वाला
समर्थक	नेता
भयग्रस्त	बहादुर
शांति बनाने वाली	आक्रामक
सजग	साहसी
मृदुभाषी	मुखर

जेंडर भूमिकाएं

महिलाएं एवं पुरुष जिन विशिष्टताओं, भूमिकाओं तथा जिम्मेदारियों का अनुभव करते हैं वे लैंगिक अंतरों के कारण उत्पन्न नहीं होती। यह सभी सामाजिक निर्मिति हैं। सामाजिक व्यवस्था की सांस्कृतिक अपेक्षाओं के अनुसार यह अलग-अलग समाजों में भिन्न-भिन्न होती है। जेंडर भूमिकाएं समाज की इन अनुभूतियों पर आधारित महिलाओं और पुरुषों के लिए निर्धारित की गई अलग-अलग गतिविधियों को प्रतिबिंबित करती हैं। यही कारण है कि महिलाएं एवं पुरुष अलग-अलग पेशे का चुनाव करते हैं। जेंडर भूमिकाओं का निर्धारण महिला एवं पुरुष के कौशल पर आधारित नहीं होता। अपितु यह सामाजिक मानसिकताओं का परिणाम है, जिसके आधार पर पुरुषों को आर्थिक गतिविधियों तथा महिलाओं को घरेलू कार्यों से जोड़कर देखा जाता है।

विभिन्न संस्कृतियों तथा समय के अनुसार जेंडर की भूमिकाओं में परिवर्तन देखा गया है। उदाहरण के लिए भारत में महिलाओं के कार्य के रूप में और अफ्रीका में पुरुषों के कार्य के रूप में अकुशल श्रम देखा जाता है। यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका में पुरुष घरेलू कार्य में अधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जबकि भारत तथा अन्य अनेक दक्षिण एशियाई देशों में घर के कार्य में महिलाओं की प्रत्यक्ष भूमिका होती है।

पुरुषत्व

लैटिन शब्द मस्कुलस उत्पन्न पुरुषत्व से अभिप्राय पुरुष व्यक्ति से होता है। चौदहवीं शताब्दी में पुरुषत्व शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम पुरुष लिंग को प्रतिबिंबित करने के लिए किया गया था। पुरुषत्व के लक्षणों में मजबूती, बल, पुरुषोचित हिम्मत तथा मर्दानगी प्रमुख हैं। सन् 1960 और 70 के दशक में हुए विभिन्न अध्ययनों में पुरुषत्व से संबंधित विशेषताओं का निर्धारण किया गया। इनमें प्रमुख है आक्रामकता, महत्वाकांक्षा, विश्लेषणात्मक योग्यता तथा मुखरता। रायविन कॉनेल द्वारा लिखे गये लेख में बालकों के शरीर में होने वाली सामाजिक निर्मिति की चर्चा 1979 में अपने लेख में की है। उनके अनुसार बालकों में शारीरिक गठन ताकत एवं मजबूती के विकास की ओर ध्यान देने की प्रवृत्ति होती है। वे बाल्यावस्था से ही खेलकूद की ओर आकर्षित होते हैं।

स्त्रीत्व

महिलाओं से जुड़े गुणों, व्यवहारों, वेशभूषा, विशेषताओं, शारीरिक संरचना आदि लक्षणों, मुद्राओं आदि का सांस्कृतिक रूप से बना समुच्चय स्त्रीत्व कहलाता है। पुरुषत्व की ही भांति यह भी निर्मित है प्राकृतिक नहीं। फ्रांसीसी दार्शनिक सिमोन द बोउवार के अनुसार स्त्री जन्म नहीं लेती अपितु निर्मित की जाती है। जुडिभ बटलर के अनुसार, 'अभिनय को बार-बार किए जाने वाले कार्य स्त्रीत्व का भ्रम रचते हैं।' यह स्त्रीत्व स्वभावगत और देशीयकृत होकर स्त्री गुणों की निर्मिति करता है। नवउदारवाद, संस्कृति जाति तथा अन्य सामाजिक संरचनाओं पर विशेष रुप से ध्यान केंद्रित करते हुए स्त्रीत्व पर अध्ययन करते हैं। इस अध्ययन के अंतर्गत इस बात पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है कि किस प्रकार ये संरचनाएं महिलाओं की स्वतंत्रता तथा प्राप्त अवसरों पर रोक लगाती हैं। इसके कारण महिलाओं के उत्पीड़न तथा जेंडर असमानता को बढ़ावा मिलता है। उदाहरण के लिए यूरोपीय संघ में महिलाओं ने रोजगार के लिए प्रेरणा प्रदान की। फिर भी वेतन में जेंडर असमानता पाई जाती है।

भारत में जेंडर और समानता का विवरण प्रयुक्त सारणी से मिलता है–

सारणी : जेंडर असमानताएं – भारत में कुछ सूचक

जनांकिकीय प्रोफाइल				
जनसंख्या	इकाई	1991	2001	2011
कुल	करोड़	84.6	102.9	121.1
महिला	करोड़	40.7	49.6	58.7
पुरुष	करोड़	43.9	53.2	62.3
लिंगानुपात				
सम्पूर्ण भारत		926	933	943
ग्रामीण		938	946	949
शहरी		893	900	929
जीवन प्रत्याशा	वर्ष	2001-05	2006-10	2011-15

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

पुरुष		63.1	64.6	67.3
महिला		65.1	67.7	69.6
साक्षरता दर	प्रतिशत	1991	2001	2011
(सात से अधिक वर्ष)				
कुल		52.21	64.84	72.99
पुरुष		64.13	75.26	82.14
महिला		39.29	53.67	85.46
उच्च शिक्षा	प्रशित	1950-51	2005-06	2013-14
कुल		उपलब्ध नहीं	11.16	21.1*
पुरुष		उपलब्ध नहीं	13.5	22.3
महिला		उपलब्ध नहीं	9.4	19.3

सन्दर्भ : भारत आंकड़े 2015, सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय।

सारणी से यह प्रदर्शित होता है कि भारत में सभी स्तरों पर जेंडर असमानताएं पाई जाती हैं। पूरे संसार में निर्धन लोगों की जनसंख्या का अधिकांश भाग महिलाओं का ही है। एस्थर बोसरप ने अपनी पुस्तक 'आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका में' बताया है कि अफ्रीका में महिलाएं खाद्य उत्पादन में संलग्न रहती हैं, परंतु खाद्य एवं कृषि संगठन के अनुसार, अधिकतर समाजों में भूमि पर अधिपत्य पुरुषों का ही है।

सार्वजनिक और निजी विभेद

सार्वजनिक तथा निजी के बीच के विरोधाभास के चलते महिलाएं घर तक सीमित रहते हैं तथा उनका बाहर आना-जाना एवं घूमना फिरना प्रतिबंधित रहता है। यही कारण है कि महिलाओं को घरेलू भूमिकाओं जैसे देखभाल एवं पालन-पोषण तक ही सीमित कर दिया जाता है। सार्वजनिक तथा निजी के बीच विरोधाभास महिलाओं के भौतिक स्वावलंबन एवं शिक्षा तक पहुँच के मार्ग में बाधा उत्पन्न करता है। इसके कारण महिलाओं को मताधिकार एवं जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में समान सहभागिता के लिए संघर्ष करना पड़ा है। निजी क्षेत्र प्रत्यक्ष रूप से घरेलू कार्यों एवं गतिविधियों से संबंधित है तथा सार्वजनिक क्षेत्र घर के बाहर की गतिविधियों को समाहित करता है। नारीवादियों ने इस विभेद को पदसोपान एवं पितृसत्ता से जोड़ कर देखा है। इस विभाजन के परिणामस्वरूप महिलाओं को अधीनस्थ की भूमिकाएं एवं प्रस्थिति प्राप्त होती है। साथ ही, महिलाओं को पुनरुत्पादक भूमिकाओं के चलते निजी क्षेत्रों तक सीमित कर दिया जाता है, जबकि पुरुषों को सार्वजनिक क्षेत्र में अर्थव्यवस्था व्यवसाय राजनीतिक एवं कानूनी क्षेत्रों में अवसर प्रदान किए जाते हैं।

पितृसत्ता

पुरुषवर्ग के शासन को पितृसत्ता का नाम दिया गया है। पितृसत्तात्मक संस्थाओं में पुरुषों का प्रभुत्व एवं महिलाओं की अधीनस्थता परिलक्षित होती है। समाज के विभिन्न स्तरों पर पुरुषों एवं स्त्रियों के बीच भेदभाव स्पष्ट एवं प्रत्यक्ष रुप से दिखाई देता है। इसके फलस्वरूप महिलाओं को कम अवसर, कमजोर अभिकर्तृत्व, एवं उत्पीड़न जैसे भेदभाव का सामना करना पड़ता है। पितृसत्ता के द्वारा ही निजी क्षेत्र की सीमा का निर्धारण किया जाता है एवं महिलाओं को इस सीमा के अंतर्गत कार्य करने के निर्देश भी दिए जाते हैं। मानक परिवार, समाज, राजनीति, सरकार, मीडिया और धर्म जैसी सामाजिक संरचनाओं में पितृसत्तात्मक विचारधारा अत्यंत प्रभावशाली होती है। पितृसत्तात्मक समाजों में संपत्ति का उत्तराधिकारी पुत्र होता है, विवाह के पश्चात् महिलाओं से अपने पति के घर आने तथा वहीं निवास करने की अपेक्षा की जाती है।

प्रारूपों को रूढ़ करना (स्टीरियोटाइपिंग)

जब हम स्त्री वाचक तथा पुरुष वाचक विशेषताओं एवं गुणों के विषय में बार-बार चर्चा करते हैं, इसे प्रारूपों को रूढ़ करना अर्थात जेंडर स्टीरियोटाइपिंग कहा जाता है। जेंडर स्टीरियोटाइपिंग के माध्यम से पुरुषों एवं महिलाओं द्वारा किए जा सकने वाले कार्य निर्धारित किए जाते हैं। जेंडर स्टीरियोटाइपिंग परिवर्तन बहुत धीमे एवं समय के साथ होते हैं। जेंडर स्टीरियोटाइपिंग के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-घरेलू कार्यों, बच्चों के पालन-पोषण, दयालुता एवं उदारता जैसी भावनाओं की अपेक्षा अधिकांश दक्षिण एशियाई समाजों में महिलाओं से ही की जाती है। इसके अतिरिक्त महिलाओं की वेशभूषा तथा घरेलू कार्यों में निपुणता, वाकपटुता आदि गुणों को भी महत्त्वपूर्ण माना जाता है। एशियाई समाजों में लड़कियों को पारंपरिक पेशा जैसी शिक्षण अथवा चिकित्सा संबंधी कार्य, जो पुनरुत्पादक भूमिकाओं से जुड़े हैं, अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

जेंडर स्टीरियोटाइपिंग के कारण पुरुष एवं महिलाओं द्वारा अपनी भूमिकाएं त्याग कर दूसरे जेंडर की भूमिकाओं को अपनाना संघर्षपूर्ण है। मीडिया का जेंडर स्टीरियोटाइपिंग में विशिष्ट योगदान है क्योंकि इनके माध्यम से अधिकांशतः पुरुषों को पुरुषत्व के गुणों के साथ चित्रित किया जाता है, जबकि महिलाओं को निर्भर एवं लाचार दिखाया जाता है।

नारीवाद

महिलाओं के उत्पीड़न तथा हीनप्रस्थिति के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए नारीवाद आंदोलन शुरू किया गया। यह आंदोलन पुरुषों एवं महिलाओं की एक समान प्रस्थिति के लिए आवाज उठाता है तथा महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए सामूहिक चेतना का विकास करता है। समाज का कोई भी व्यक्ति अथवा समूह जेंडर समानता तथा जेंडर संगतता के लिए प्रयास कर सकता है एवं महिलाओं के विरुद्ध होने वाले अत्याचार, उत्पीड़न, शोषण और हिंसा के विरुद्ध लड़ सकता है।

सन् 1871 में फ्रांस में चिकित्सीय पुस्तकों में सर्वप्रथम नारीवादी शब्द का प्रयोग किया गया था। नारीवादी आंदोलन विभिन्न ऐतिहासिक अवधि में उभरने वाले आंदोलनों की श्रेणी में

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

सम्मिलित किया गया है। नारीवाद की सबसे पहली अवधारणा 19वीं एवं 20वीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में विकसित हुई जब महिलाओं को मताधिकार दिलाने के लिए संघर्ष किए गए। महिलाओं के लिए परिवार तथा कार्यस्थल में लैंगिकता के संदर्भ में पुरुषों के समान अधिकारों के लिए 1960 और 70 के दशकों में नारीवाद गतिविधियों की दूसरी लहर शुरू हुई। नारीवाद की तीसरी लहर का आरंभ 1990 के दशक से हुआ जो अभी तक जारी है।

जेंडर आधारित हिंसा

जेंडर आधारित हिंसा किसी व्यक्ति के साथ भेदभाव के परिणामस्वरूप होने वाली हिंसा को प्रदर्शित करती है। यह भेदभाव व्यक्ति,जाति, वर्ग, धर्म, लैंगिकता, योग्यता एवं अन्य स्थिति पर कार्य के आधार पर किया जाता है। जेंडर आधारित हिंसा का एक उदाहरण 1970 के दशक में 'बैटर्ड विमेन' नामक आंदोलन में देखने को मिलता है। यह आंदोलन नारीवाद की दूसरी अवस्था का एक हिस्सा था।

संयुक्त राष्ट्र निधि जेंडर आधारित हिंसा से संबंधित विषयों पर संबोधित करने में महिलाओं तथा नारीवादियों की सहायता की है। इसके अंतर्गत 4 अंतर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलनों में निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों में होने वाली हिंसा को पहचान कर नीति के संदर्भ में एक व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया।

यौन उत्पीड़न

कार्यस्थल पर जेंडर आधारित लैंगिक हिंसा यौन उत्पीड़न के नाम से जानी जाती है। इसके अंतर्गत अवांछनीय लैंगिक गतिविधियों के माध्यम से दूसरों को धमकाना, कार्य स्थल पर प्रतिकूल वातावरण बनाना, लैंगिकता से पूर्ण इशारे करना, स्पर्श करना, चिढ़ाना, लैंगिक इच्छाओं की पूर्ति की मांग करना, अश्लील एवं असभ्य चीजें दिखाना एवं यौनिक प्रकृति का कोई अन्य अवांछनीय शारीरिक, मौखिक या अमौखिक कृत्य सम्मिलित है। यौन उत्पीड़न का पीड़ित व्यक्ति पर अत्यधिक बुरा प्रभाव पड़ता है। सिंगापुर में 500 उत्तरदाताओं के बीच होने वाले अध्ययन के अनुसार, आधे से अधिक लोगों ने कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न का दंश अनुभव किया है।

सशक्तिकरण

नाइला कबीर के अनुसार, 'जीवन में लोगों की रणनीति का चयन करने की योग्यता में विस्तार सशक्तिकरण के अंतर्गत आता है, जो पहले निषेध होता था।' उन्होंने सशक्तिकरण के तीन आयामों का वर्णन किया है–

(1) संसाधन (परिस्थितियां),

(2) अभिकरण (प्रक्रिया),

(3) उपलब्धि।

सशक्तिकरण की प्रक्रिया में महिला एवं पुरुष दोनों वर्ग अपने-अपने जीवन पर नियंत्रण रखते हैं तथा अपनी अपनी कार्यसूचियां स्वयं निर्धारित करते हैं, उनके लिए कौशल हासिल करते हैं, आत्म-विश्वास प्राप्त करते हैं तथा अपनी समस्याओं का समाधान करते हैं और आत्म-निर्भर बनते हैं।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. उपयुक्त उदाहरणों के साथ सेक्स तथा जेंडर की संकल्पनाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर–जेंडर का अर्थ स्त्री या पुरुष होने की अवस्था से है अर्थात नारीत्व या पुरुषत्व की अवस्थिति और सामाजिक संदर्भ में इसका अर्थ पुरुषों एवं महिलाओं के बीच के सामाजिक अंतर से है। लड़के और लड़कियां समाज में अपने वृद्धि के साथ इन अंतरों को सीखते हैं, जो एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में भिन्न होते हैं। स्त्री और पुरुषों की पहचान उनके आसपास के सामाजिक वातावरण के कारण अलग होती है, क्योंकि समाज शिशु के जन्म के समय से ही लड़के, लड़की से अलग तरह की उम्मीद लगाना आरंभ कर देता है।

यही कारण है कि जनरल भूमिकाएं काफी कम उम्र में ही अपना स्वरूप कायम कर लेती हैं। हर संस्कृति का पुरुषों और महिलाओं का मूल्यांकन करने और उन्हें भूमिकाएं व जिम्मेदारियां सौंपने का तरीका अलग-अलग होता है। जेंडर का अर्थ स्त्री और पुरुषों की सामाजिक सांस्कृतिक परिभाषा और इनके बीच का अंतर बताने के लिए समाज की भाषा से है। जेंडर की सोच उन भूमिकाओं, अभिवृत्तियों तथा मूल्यों के इर्द-गिर्द घूमती है, जिन्हें समाज स्त्री और पुरुषों के लिए सही मानकर उन पर छपता है। जेंडर ऐसी सामाजिक अवधारणा है जो लोगों को पुरुषत्व और नारीत्व की रूढ़िवादी परिभाषाओं से बांधती है और हम क्या सोचते हैं, कैसा महसूस करते हैं और किन बातों को मानते हैं, इन पर भी अवधारणा का असर होता है। व्यक्ति पुरुष है या महिला यह इस बात पर असर डालती है कि लोग व्यक्ति को कैसे देखते हैं, जिसके आधार पर समाज व्यक्ति से यह आशा करता है कि उसे कैसा व्यवहार करना चाहिए।

जेंडर का अर्थ व संबंध महिलाओं और पुरुषों की पारिवारिक स्थिति से है। जेंडर कोई स्थाई सोच नहीं है यह तो एक सामाजिक अवधारणा है और सामान्यतया वर्ग, आयु और धर्म जैसे कारकों द्वारा भी प्रभावित होती है। पुरुषत्व और नारीत्व क्या है इनकी परिभाषाएं संस्कृतियों में समय के साथ बदल सकती हैं और बदलती भी हैं।

जेंडर व्यक्तित्व विशेषताओं, अभिवृत्तियों, अनुभूतियों, मूल्यों, व्यवहारों तथा गतिविधियों के संपूर्ण प्रभाव क्षेत्र के रूप में देखा जा सकता है, जिन्हें समाज विभेदन के आधार पर स्त्री या पुरुषों को सौंपता है। यह एक ऐसी सामाजिक अवधारणा है, जो विभिन्न समाजों में विभिन्न काल में बदलती रही है। व्यापक रूप में इसकी पहचान हमारे जीवन के हर पहलू को संरक्षित करती है। परिवार, कार्यस्थल, सामाजिक स्तरीकरण, राज्य एवं साथ ही साथ लैंगिकता, भाषा और संस्कृति हर जगह इसका वर्चस्व कायम रहता है। प्रत्येक

www.neerajbooks.com